॥ श्री ॥

पद्मपुराण

PADMAPURAANA

रविषेण · ७वीं शती · अभिलेख ६९/९०

श्री लक्ष्मणसेन → रविषेण

संक्षिप्त परिचय

आचार्य रविषेण कृत संस्कृत महाकाव्य — राम (पद्म) कथा का जैन निरूपण; रावण विद्याधर-वंशी मानव के रूप में — यही 'जैन रामायण' की प्रधान परम्परा बनी।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

पद्मपुराण — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ६९ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता रविषेण; रचना-काल ७वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक ११६) के अनुसार इनका समय ६७७ है तथा गुरु श्री लक्ष्मणसेन। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "श्री पद्मपुराणजी" उल्लिखित है। समकालीन ग्रन्थों में वरांगचरित परिगणित हैं।

समकालीन ग्रन्थ

वरांगचरित

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ | जैनकोश ↗ | Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति ६९ — मूल छायाचित्र